वेदों में राजधर्म

*जल सिंह गुर्जर

वैदिक संहिताओं में राजा का पद अत्यन्त महत्वपूर्ण था। ऋग्वेद में शताधिक बार राजा शब्द का प्रयोग एक वचन, बहुवचन एवं विभिन्न विभक्तियों में हुआ है– जैसे राजा, राजन्, राजानौ, राज्ञः, राजसु, राज्ञे, राज्ञाः इत्यादि।''

ऋग्वेद में राजा का प्रयोग विभिन्न देवताओं के महत्त्व ज्ञापन में किया गया है। ऋग्वेद में वरुण को प्रथम राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया है जबकि राजा शब्द इन्द्र, अग्नि, सोम, मित्र आदि देवों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। वह राजा के लौकिक अर्थ में भी राजा शब्द का प्रयोग किया गया है। इतना ही नहीं, राजा के साथ विभिन्न स्थान विशेषों का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इस तरह राजा, जाति, स्थान एवं देश विशेष से संबंधित थे।

राजा के पद की उत्पत्ति कैसे एवं कब हुई, इस पर ऋग्वेद में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। मात्र एक मंत्र में प्रथम राजा के चयन का वर्णन मिलता है।' ऐतरेय ब्राह्मण में एक कथा मिलती है, कि देवासुर संग्राम में पराजय के बाद देवों को उत्तर दिशा के स्वामी सोम की मदद से विजय प्राप्त हुई, तब देवों ने सोम को अपना राजा बनाया एवं सभी दिशाओं पर विजय प्राप्त की। राजा की उत्पत्ति पर तैत्तिरीय संहिता एवं अथर्ववेद में भी प्रकाश डाला गया है। राजा की उत्पत्ति के पीछे युद्ध बहुत बड़ा कारण था, क्योंकि संहिताओं में राजा का संबंध युद्ध से प्रतिपादित है। ऋग्वेद के सप्तम मण्डल में भरत एवं तृत्सु राजाओं का उल्लेख युद्ध के संदर्भ में ही हुआ है। इन्द्र राजा के द्वारा वृत्र नामक असुर के मारे जाने का अनेक स्थलों में उल्लेख मिलता है। वैदिककालीन राजा शत्रुओं का नाश कर प्रजा की रक्षा करते थे। प्रजा की रक्षा एवं सेवा ही अध्यक्षात्मक जनतंत्र के राजा का कर्तव्य था। यजुर्वेद की कृष्ण एवं शुक्ल दोनों शाखाओं में राजा की विजय एवं उसके महत्त्व का वर्णन प्राप्त होता है। वाजसनेयी संहिता में राजसूय यज्ञ के संदर्भ में राजा का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

राजा का चयन एवं कार्य –

ऋग्वेद में राष्ट्र के प्रशासक वर्ग को राजन्य नाम से सम्बोधित किया गया है। राजन्य की उत्पत्ति विराट् पुरुषों से बतायी गयी है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार वैदिक काल में राजन्य वर्ग में वे ही सम्मिलित किये जाते थे, जिनमें क्षत्र एवं बल की प्रधानता रहती थी। प्रजापालन की शक्ति क्षत्रिय में ही थी, अतः उन्हें ही राजा बनाया गया।

वैदिक संहिताओं में राजा के चयन की कई प्रणालियों का उल्लेख मिलता है :–

(क) जिसमें शक्ति की प्रधानता रहती थी, उसे राजा मनोनीत किया जाता था। राष्ट्र में जो सबसे अधिक शक्तिशाली एवं प्रतिभावान होता था, उसे प्रजा राजा के रूप में स्वीकार कर लेती थी, क्योंकि वही उसके संकटों को दूर करने एवं विजय प्राप्त कराने में समर्थ हो सकता था।

इस आधार पर देवों ने सर्वप्रथम इन्द्र को अपना राजा बनाया।

(ख) वैदिक काल में राजा वंश परम्परागत भी होते थे। शतपथ ब्राह्मण में एक ही वंश के दस पुरुषों के राजा होने का उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद में राजा वेन एवं राजा नहुष के वंशजों का उल्लेख मिलता है। ये राजा प्रजा के विश्वसनीय होते थे। राजा स्वार्थी या निरंकुश होने पर प्रजा इन्हें पदच्युत कर देती थी, परन्तु सामान्यतः उसका ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य–पदाधिकारी होता था। वैदिक काल में ज्येष्ठ पुत्र एवं पुत्रियों के अधिकारों की रक्षा की जाती थी। इन्द्र के ज्यैष्ठ्य पद का ऋग्वेद में कई बार संकेत किया गया है। तैत्तिरीय संहिता में भी यह बात लिखी हुई है कि पिताजी की सारी सम्पत्ति ज्येष्ठ पुत्र को मिलती है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार देवों ने इन्द्र के ज्येष्ठ पद को अस्वीकृत कर दिया था, अतः इन्द्र ने बृहस्पति द्वारा द्वादशाह यज्ञ सम्पादित कर अपनी पूर्व स्थिति प्राप्त की। छोटे भाई शान्तनु ने बड़े देवापि से राजा छीन लिया। देवापि के तप से शान्तनु के राज्य में बारह वर्षों तक वृष्टि नहीं हुई। तब ब्राह्मण ने शान्तनु को बड़े भाई का अधिकार लौटाने की सलाह दी। प्रसन्न होकर देवापि ने पुरोहित का पद स्वीकार कर लिया एवं यज्ञ प्रारम्भ की। रूष्ट देवगण प्रसन्न हो गये। देवापि ने वर्षों के लिए मंत्र प्रकट किये, जिनका वर्णन ऋग्वेद में उपलब्ध है। इसका वर्णन दूसरे ढंग से बृहदेवता में भी मिलता है।

(ग) समिति द्वारा भी राजा का चयन किया जाता था। प्रजा श्रेष्ठ एवं सर्वसम्मति से निर्वाचित व्यक्ति को राजा के रूप में वरण करती थी। ऋग्वेद, अथर्ववेद यजुर्वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथों में भी प्रजा द्वारा राजा के चयन की प्रणाली का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद की एक ऋचा में एक वीर वरुण से याचना करता है कि यदि तुम मुझे चाहते हो तो सत्य असत्य का विचार कर मुझे राजा बना दो मैं राष्ट्र को संकट मुक्त कर दूंगा। भद्र लोग, राजा–निर्माता या राजा के कर्ता, सूत, ग्राम, मुखिया, दक्ष, रथकार, कुशल धातुनिर्माता राजा को चुनते थे, ऐसी ध्वनि अथर्ववेद में मिलती है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में राजा के निर्माता को रनिन् कहा गया है। रनिन् लोग ही राष्ट्र राजा को देते हैं।

राजा के पद की उत्पत्ति कैसे एवं कब हुई, इस पर ऋग्वेद में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। मात्र एक मंत्र में प्रथम राजा के चयन का वर्णन मिलता है।' ऐतरेय ब्राह्मण में एक कथा मिलती है, कि देवासुर संग्राम में पराजय के बाद देवों को उत्तर दिशा के स्वामी सोम की मदद से विजय प्राप्त हुई, तब देवों ने सोम को अपना राजा बनाया एवं सभी दिशाओं पर विजय प्राप्त की। राजा की उत्पत्ति पर तैत्तिरीय संहिता एवं अथर्ववेद में भी प्रकाश डाला गया है। राजा की उत्पत्ति के पीछे युद्ध बहुत बड़ा कारण था, क्योंकि संहिताओं में राजा का संबंध युद्ध से प्रतिपादित है। ऋग्वेद के सप्तम मण्डल में भरत एवं तृत्सु राजाओं का उल्लेख युद्ध के संदर्भ में ही हुआ है। इन्द्र राजा के द्वारा वृत्र नामक असुर के मारे जाने का अनेक स्थलों में उल्लेख मिलता है। वैदिककालीन राजा शत्रुओं का नाश कर प्रजा की रक्षा करते थे। प्रजा की रक्षा एवं सेवा ही अध्यक्षात्मक जनतंत्र के राजा का कर्तव्य था। यजुर्वेद की कृष्ण एवं शुक्ल दोनों शाखाओं में राजा की विजय एवं उसके महत्त्व का वर्णन प्राप्त होता है। वाजसनेयी संहिता में राजसूय यज्ञ के संदर्भ में राजा का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

(घ) ऋग्वेद के वर्णन से राजा की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्त की भी पुष्टि होती है। पुरुकुत्सपुत्र त्रसद्दस्यु कहता है – "देव लोग वरुण की शक्ति पर निर्भर है, किन्तु मैं लोगों का राजा हूं। मैं इन्द्र और वरुण हूं, मैं विशाल एवं गंभीर तथा पृथिवी हूं, मैं अदिति का पुत्र हूं।'' यहां उसने अपने को वैदिक देवों में सर्वश्रेष्ठ देव कहा है। ऋग्वेद में भी ऋषि कहता है – हे राजा ! तुम्हें सभी लोग चाहें, तुम्हारे हाथों से राज्य छीना न जा सके, तुम इन्द्र के समान विश्व में सुस्थिर रहो, तुम राज्य धारण किये रहो," तथा शतपथब्राह्मण में वाजपेय यज्ञ में बाण चलाते समय ऐसा कहा गया है –'राजन्य प्रजापति का है, वह अकेला है, किन्तु बहुतों पर राज्य करता

है।'' यहां भी राजा का प्रजापति या प्रतिनिधि होना दैवीय सिद्धान्त को बल देता है। विश्वरूप ने एक लम्बे वैदिक अंश (आयाम) को उद्धृत कर ऐसा लिखा है – देवों ने प्रजापति से कहा – "हम लोग सोम, सूर्य, इन्द्र, वरुण, अग्नि, विष्णु, कुबेर एवं यम से क्रमानुसार महत्ता, दीप्ति, ओज, तेज, शक्ति, विजय, औदार्य एवं नियंत्रण लेकर मानवरूप में राजा के लिए व्यवस्था करेंगे।

***व्याख्याता**
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कॉलेज, खेड़ली,
अलवर, (राज.)

संदर्भ सूची

1. ''अबुघ्ने राजावरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते पूतदक्षः।
   नीचीनाः स्थुरुपरि बुघ्न एषामस्मे अन्तर्निहिताः केतवः स्युः।।''
   उरू हि राजा वरूणश्चकार.....।''– ऋग्वेद 1/224/7–8
2. (क) "देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपरू पुपोष प्रजा पुरुधा जजानः।''–ऋ. 3/55/19.
   (ख) "समानो राजा विभृतः पुरूत्रा''–ऋ. 3/55/4.
   (ग) यो वः सेनानी महतो गणस्य राजा वातस्य प्रथमो बभूव।।''– ऋ.10/45/5.
3. ''तृत्सुनां राजाश ऋ. 1/83/6
4. ''राजाविश्वस्य भुवनस्य''– ऋ. 10/168/1
5. ''देवासुरा एषु लोकेषु समयन्तज्ञ.....तथेति ते सोमं राजानमकुर्वन्।।''– ऐ.ब्रा. 1/14/11
6. तैत्तिरीय संहिता–2/4/2 एवं अथर्ववेद. 15/8.
7. ''राजेव युद्धवा नयसि त्वं''– ऋग्वेद 10/75/4
8. ''अनेन विश्वाद्यनिन दुरिता पयस्य''– ऋ. 9/90/6
9. ऋग्वेद 7/18वाँ सूक्त.
10. ''जनस्य गोपा'', समभृजा न आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः"– ऋग्वेद–9/57/31.
    ''सः मित्रं प्रमिनाति'' "हितोमित्रो न राजा'' – ऋग्वेद 1/173/3
11. (क) तस्माद्राजा संग्रामं जयति अपि तत्र स्थितग्रामणीना''–काठकसं. 28/3
    (ख) ''तस्माद्राजा संग्राम जित्वा उदाजमुदजते''– मैत्रा.सं. 1/10/10.
    (ग) ''तस्माद्राजा संग्राम जित्वा निराजनिरजते''–कपि.सं. 10/4/2.
12. सोमस्य त्वा घुम्नेनाभिषिंचाम्यग्रेभ्राजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेण।

क्षत्राणां, क्षेत्रपतिरेध्यति दि न्याहि। 17

इमं देवा असपत्नसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय

.....सोमो अस्माकं ब्राह्मणानां राजा। वा.सं. 10/17–18.

13. शतपथ ब्राह्मण–10/12/6/13, 6/5/1/13
14. ''औजसा एताद्विशं क्षत्राय परिगृह्णाति।''–मैत्रा.सं. 6/7/8; ऋ. 10/34/12

''औजसैव वीर्येण मिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम्।।''–ऋग्वेद 8/64/3.

15. ''त्वमीशिषे सुताना मिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम।
16. ऋग्वेद 8/64/3 ऋग्वेद 10/29/1–2
17. ''दुष्टरीतुर्ह पौसांयनः दृशपुरुषं राज्यादपरूद्ध आस'' शतपथ ब्रा. 1/3/9/12
18. दिवा नाके मधुजिह्वा असश्चो वेनादुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।।''–ऋग्वेद–9/85/10
19. ''वीति जनस्य दिव्यस्य कव्यैरधि सुवा नो नहुव्यैमिरिन्दुः।'' – ऋग्वेद–9/2/12
20. ऋग्वेद–1/5/6, 3/50/3
21. तै.सं.–5/2/7
22. ऐ.ब्रा.–19/4
23. ऋग्वेद–10/98
24. 7/156–157, 8/1–9 वृहद् देवता
25. ता ई विशो न राजानं वृणाना बीमत्सुवो अप वृत्रादतिष्ठन। – ऋग्वेद–10/128/8, 10/173 सूक्त
26. अथर्ववेद, 3/4/2
27. यजुर्वेद तै.स. 1/6/6
28. ऋग्वेद–10/124/5–6
29. अथर्ववेद–3/5/6–7
30. रनिनामेतानि हविषिभवन्ति। एते वै राष्ट्रस्य प्रदातारः।। –ते.ब्रा.
31. ऋग्वेद–4/42वाँ सूक्त
32. अथर्ववेद–6/87/1–2